www.thenarrativeworld.in

चीनी कम्युनिस्ट निरंकुशता के 100 वर्ष

A visual handbook by

THE NARRATIVE

समर्पित

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा प्रताड़ित, पीड़ित
एवं बलिदानी नागरिकों के लिए

Concept, content and graphic design by team **The Narrative**

Copyright © 2021 I All rights reserved.

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना 1

संघर्ष से सत्ता तक 3

पार्टी का लाल सितारा 11

आतंक के साए में 25

ना एक विचार ना एक सिद्धांत 30

भविष्य की डगर 36

टाइमलाइन 42

हमारे बारे में 56

प्रस्तावना

"दुनिया के मजदूरों एक हो", कहने को तो ये नारा तथाकथित साम्यवादी क्रांति के पुरोधा माने जाने वाले 'कार्ल मार्क्स' ने दुनिया में शोषित वर्गों को एक करने के नाम पर दिया था, किन्तु भविष्य में इसके दुष्परिणाम इतने भयावह होंगे ये तब निश्चित ही मानवीय कल्पनाओं की परिसीमाओं से परे रहा होगा।

वर्ष 1917 में कार्ल मार्क्स की "पूंजीवादी व्यवस्था से निकलकर समाजवाद के रास्ते, साम्यवाद के चरम पर पहुंचने के (वर्ग रहित) आदर्श" की प्रेरणा से जन्मी रुसी क्रांति के प्रणेताओं ने वैश्विक परिदृश्य में विद्यमान औपनिवेशिक शक्तियों के संघर्ष जनित परिस्थितियों को खूब भुनाया, फलस्वरूप रूस की परिसीमाओं से निकल कर इस खूनी संघर्ष ने विश्व के दूसरे राष्ट्रों की भूमि को भी रक्तरंजित किया।

क्रांति स्वस्फुरित थी, किन्तु नायकों ने इसे साम्यवादी वैचारिक स्वीकार्यता का ज्वलंत उदाहरण माना, ऐसे में इसका विस्तार स्वाभाविक ही था, परिणामस्वरूप तात्कालिक रूप से अपमान और शोषण की त्रासदी झेल रहे चीन में, जनमानस में पनपते राष्ट्रवाद की आड़ में क्रांति के चीनी स्वरुप की पृष्ठभूमि तैयार की गई।

साम्यवादी विचारधारा समर्थित समूहों का गठन के माध्यम से श्रमिकों कामगारों एवं विचारधारा रहित वर्ग को लोमहर्षक उद्बोधनों से एकत्रित कर खूनी संघर्ष की नीव रखी गई और फलस्वरूप जुलाई 1921 में उद्भव हुआ एक ऐसे संगठन का जो आने वाले वर्षो में चीनी राष्ट्र को अपने रक्त-पिपासा की तृष्णा से रक्तरंजित करने वाला था।

1921 में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना से 1949 में सत्ता के शीर्ष तक पहुंचने की अपनी तृष्णा को, तथाकथित समानता के आदर्श को वैचारिक रूप से समर्पित संगठन द्वारा, लाखों लोगों के नरसंहार से पोषित किया गया। इस दौरान संगठन द्वारा प्रतिद्वंदियों की हत्याओं से लेकर, क्रूरतम मानदंडों से सत्ता के शिखर तक पहुंचने की अपनी लालसा को फलीभूत किया गया। वर्ष 1941 में पार्टी ने चीन पर एकाधिकार स्थापित किया और इसी के साथ जन्म हुआ एक ऐसी साम्राज्यवादी व्यवस्था का जिसकी वैचारिक सीमाओं की परिधि तानाशाही अधिनायकवादी व्यवस्था के क्रूरतम स्वरुप को स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध थी।

तब से लेकर आज तक अपनी इसी क्रूरतम अधिनायकवादी व्यवस्था की परिसीमाओं को अक्षुण्ण रखने के लिए पार्टी के नेतृत्वकर्ताओं ने क्रूरता और बर्बरता की पराकाष्ठा को लांघ कर निर्दोषों और मासूमों के नरसंहार से चीनी भूखंड को बारम्बार रक्तरंजित किया है। किन्तु विडम्बना तो यह है की लाखों लोगों के खून से पोषित पार्टी की साख वैश्विक ख्याति के अपने चरम पर है। वैचारिक परिपेक्ष्य, परिसीमाओं को लांघ रहा है। अद्वितीय सैन्य शक्ति के साथ साम्राज्यवादी तृष्णा विश्व को भयावह खूनी संघर्ष की ओर उद्वेलित कर रही है। क्रांति अब भी जारी है।

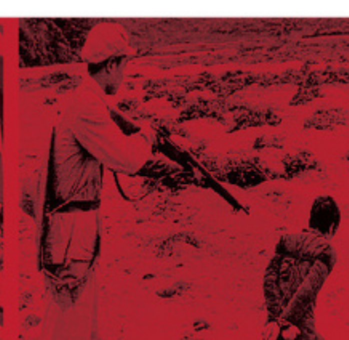

संघर्ष से सत्ता तक

वर्ष 1921 में पार्टी की स्थापना के उपरांत अगले 2-3 वर्ष तक पार्टी को अपना जनाधार मजबूत करने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा, अथक प्रयासों के बावजूद पार्टी वर्ष 1924 तक अपना जनाधार मजबूत करने में सफल नहीं हो पायी, फलस्वरूप 'कामिन्टर्न' का दबाव बढ़ा और पार्टी को 1924 में "सन यत सेन" की अगुवाई वाली कुओमिन्तांग (केएमटी) अथवा "चीनी राष्ट्रवादी पार्टी" से औपनिवेशिक शक्तियों के विरुद्ध हाथ मिलाना पड़ा, जिसके बाद इस संयुक्त मोर्चे द्वारा चीनी राष्ट्र को एकजुट करने के लक्ष्य से उत्तरी अभियान चलाया गया।

13 Representatives of First National Congress of Chinese Communism

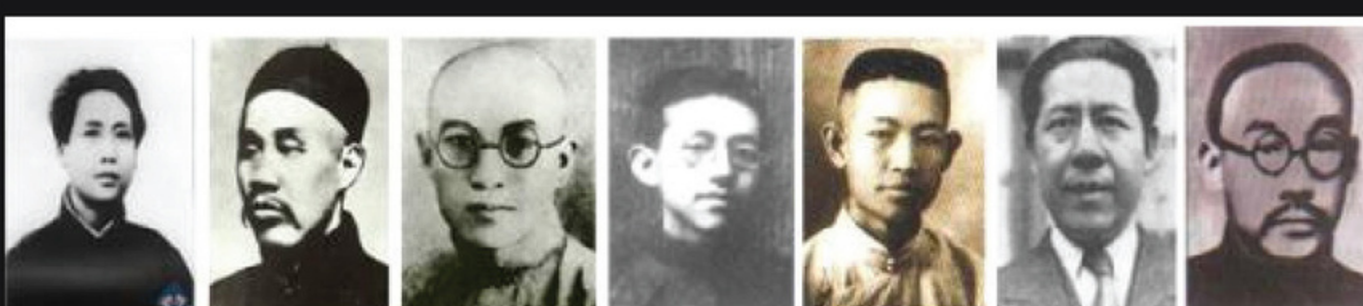

Mao Zedong | Dong Biwu | Li Da | Liu Renjing | Wang Jinmei | Chen Gongbo | He Shuheng

Chen Tanqiu | Li Hanjun | Zhanng Guotao | Deng Enming | Zhou Fohai | Bao Huiseng

हालांकि स्वार्थ की बिनाह पर किए गए गठबंधन में तीन वर्षों के भीतर ही दो गुटों के बिच मतभेद हो गया। जहाँ एक तरफ 'चिआंग कई शेक' के अगुवाई में दक्षिणपंथी राष्ट्रवादी शक्तियां थी तो दूसरी तरफ वामपंथी विचारधारा वाले केएमटी के सदस्य और सीसीपी थी। इस विभाजन ने वामपंथियों के विरुद्ध बड़े पैमाने पर रक्तपात को प्रेरित किया और फलस्वरूप अगले तीन वर्षो में करीबन 2 लाख वामपंथी विचारधारा के समर्थन करने वाले लोगों का नरसंहार हुआ।

कुओमिन्तांग

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी

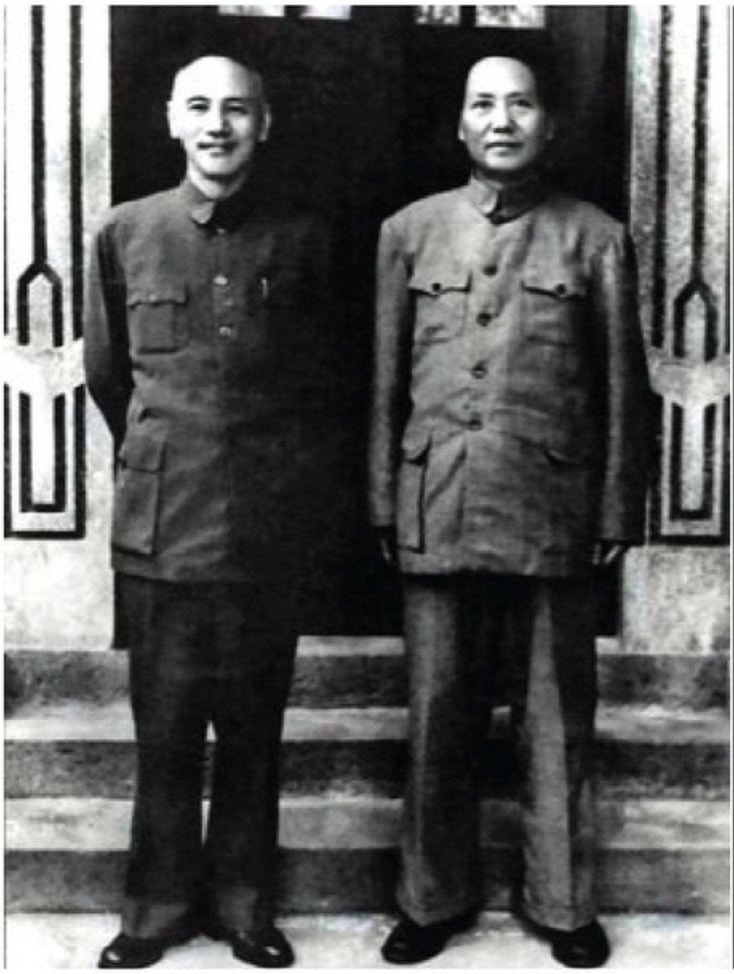

रक्तपात के इस कालखंड में ही चीनी लाल सेना (भविष्य की पीएलए) की नींव पड़ी। इसी दौरान शरद ऋतू के असफल विद्रोह से पहले सीसीपी की एक आपातकालीन बैठक में भविष्य के चेयरमैन माओ जेडोंग ने कहा कि "शक्ति बन्दूक की नली से निकलती है।"

सोवियत कामिन्टर्न ने केएमटी से सभी रिश्ते तोड़ लिए, इस विभाजन ने चीनी गृहयुद्ध की पृष्ठभूमि तैयार की जो भविष्य में लाखों लोगों के नरसंहार को पोषित करने वाली थी।

अगले 6 वर्षो तक लाल सेना और केएमटी सेना के संघर्ष के दौर में सीसीपी और उसकी सैन्य इकाई बुरी तरह से कमजोर पड़ी, राजनितिक मोर्चे पे इस दौरान सोवियत के सहयोग से पार्टी में 28 बोल्शेविक्स का वर्चस्वा बढ़ा, हालांकि उनकी नीतिया केएमटी के आक्रामक दमनकारी नीतियों के सामने टिक न सकी और अंततः केएमटी की सैन्य इकाई के दबाव में पार्टी को अक्टूबर 1934 में प्रसिद्ध "लान्ग मार्च" (लंबी कूच) की राह लेनी पड़ी।

इस कूच के दौरान चीन के विभिन्न क्षेत्रो से वामपंथी सदस्यों ने अगले एक वर्ष तक हारती हुई लाल सेना के साथ चीन के उत्तर पश्चिम प्रान्त शान्सी के 'यान' को कूच किया। इसी कूच के मध्य गुईझोऊ के जुइ अधिवेशन में इस हार के लिए 28 बोल्शेविक्स को दोषी ठहराया गया और माओ जेडोंग को लाल सेना की कमान सौंपी गई।

वर्ष 1936 के उत्तरार्द्ध में चिआंग कई शेक के अपहरण एवं जापानी आक्रमण ने रक्तरंजित गृह युद्ध में ठहराव को जन्म दिया और फलस्वरूप द्वितीय संयुक्त मोर्चे का गठन हुआ हालांकि ये संयुक्त मोर्चा अल्पकालीन था और 2 से 3 वर्षों में ही माओ के नेतृत्व में जापानी बर्बरता के विरोध में शक्तिशाली होती लाल सेना ने केएमटी की सैन्य इकाई का दमन प्रारम्भ कर दिया।

इसी दौरान वर्ष 1940 में माओ ने अपनी प्रसिद्ध "न्यू डेमोक्रेसी" के सिद्धांत को प्रतिपादित किया और पार्टी में अपना वर्चस्व स्थापित करने के प्रयासों को गति दी। वर्ष 1942 से 44 के दौरान माओ ने पार्टी में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के उद्देश्य से संशोधनों का खाका प्रस्तुत किया। इस दौरान माओ के नेतृत्व में पार्टी के वैचारिक सिद्धांतो में परिवर्तन किया गया, युद्ध के दौर में पार्टी की लोकप्रियता में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई, फलस्वरूप पार्टी ने कैडरों के लिए अनुसाशनात्मक बाध्यताओं को कठोर स्वरुप दिया और एक अधिनायकवादी तंत्र की नींव को मजबूती से स्थापित किया गया।

वर्ष 1945 में जापान के आत्मसमर्पण के उपरांत चीनी भूमि पर आधिपत्य का संघर्ष पुनः प्रारम्भ हुआ केएमटी को अमेरिका का सहयोग हासिल था पर इस दौरान पार्टी और लाल सेना बेहद शक्तिशाली हो चुकी थी। अगले तीन वर्षो तक चीनी भूमि नरसंहारों और रक्तपात की पराकष्ठा लांघने वाले अभियानों को मूक दर्शक बन कर देखती रही। वर्ष 1949 के जनवरी में लाल सेना ने बीजिंग पर आधिपत्य स्थापित किया व माओ ने आधिकारिक रूप से पार्टी के सत्ता के शीर्ष पर पहुंचने की घोषणा की। 27 वर्षो तक रक्तरंजित संघर्ष के उपरांत पार्टी संघर्ष से सत्ता तक के सफर को पूरा कर चीन की सत्ता पर काबिज हो चुकी थी।

पार्टी का
लाल सितारा
माओ ज़ेडोंग

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को 27 वर्ष के रक्तरंजित संघर्ष के उपरांत जब सत्ता मिली तो इनका आचरण अपने रूसी कामरेडों के अपेक्षाकृत भिन्न नहीं था किन्तु वैश्विक परिस्थितियों ने माओ को कुछ वर्षो तक अपने नार्थ कोरियाई कामरेडों की सहायता में उलझाए रखा

तिब्बत पर कब्जा

बावजूद इसके की चीनी सेना एक ओर कई वर्षो तक कोरियन युद्ध मे उलझी रही, कोरियाई युद्ध के समाप्ति के उपरांत केवल पांच वर्षो के भीतर ही माओ ने वर्ष 1959 में तिब्बत पर कब्जा करने का आदेश दिया, माओ के आदेश पर हजारों सैनिकों ने तिब्बत की राजधानी ल्हासा पर हमला कर हज़ारों लोगों की बर्बरता से हत्या की, सड़को पर रक्तपात हुआ, तिब्बतियों के धर्मस्थल नष्ट किए गए, तिब्बत अब चीनी तानाशाह के अधीन आ चुका था

यह भी कि ढाई दशकों के रक्तरंजित संघर्ष के उपरांत मिली सत्ता पर काबिज होने के बावजूद भी माओ की भीतर की वामपंथी कुंठा शांत नहीं हुई थी और इसे आकार लेने का अवसर मिला वर्ष 1958 में जब सोवियत की यात्रा से लौटने के उपरांत माओ ने चीन को व्यवहारिक रूप से साम्यवादी व्यवस्था में परिवर्तित करने का निश्चय किया उसकी इस सनक की कीमत आने वाले वर्षों में लाखों लोगों को अपनी जान देकर चुकानी थी

माओ ने इसकी शुरुआत पूरे देश के बुद्धिजीवियों को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी पर अपने स्वतंत्र विचार रखने के लिए आमंत्रित कर के की, उनके विचारों के आधार पर माओ ने उन्हें वामपंथी समर्थक एवं देशद्रोही की श्रेणी में विभाजित किया, इस कार्यवाही से भौंचक्के कुछ बुद्धिजीवियों ने जब इसे अपने साथ छल और षड्यंत्र बताया तो माओ ने उनका मखौल उड़ाते हुए कहा कि यह षडयंत्र तो नहीं लेकिन यह षड्यंत्र ही है

द ग्रेट लिप फारवर्ड

(1958 - 1960)

अपनी अति महत्वाकांक्षी वामवादी नीतियों की (अभिपूर्ती) के लिए माओ जेदोंग ने चीन के सुदूर क्षेत्रो में कुल 23 हजार गाँवों को लक्षित कर के कृषि क्षेत्र में तथाकथित साम्यवादी क्रांति प्रारंभ की, रातों रात किसानों को सैनिकों जैसा आचरण करने के लिए निर्देशित किया गया, महिलाओं और बच्चों के लिए अलग कार्यशालाओं का आयोजन किए जाने लगा, मजदूरों से उपकरणों के खराब हो जाने तक निरंतर कार्य कराए जाने लगा, नेताओं और अधिकारियों को उत्पादन की समीक्षा करने जो निर्देशित किया गया। इस दौरान माओ की सरकार ने बेहतर उत्पादन की सोच बड़े पैमाने पर निर्यात प्रारंभ कर दिया।

माओ इस नीति की सफलता को लेकर इतने आश्वश्त थे कि अनुभवी अधिकारियों और अभियंताओं की चेतावनी को उसने सिरे से नकारा, माओ के दबाव में अधिकारियों ने कम उत्पादन को कागज़ पर अधिक दिखाया फलस्वरूप जो भी उत्पादन हुआ उसे निर्यात कर दिया गया और केवल एक वर्ष में जनता (कालजई) आकाल से जूझने लगी।

वर्ष 1960 में अंततः माओ ने अपनी इस नीति की समाप्ति की घोषणा की किन्तु तब तक लाखों लोग भुखमरी से मारे जा चुके थे। आंकड़े छुपाने के लिए अगले दो दशकों तक जनगणना रोक दी गई अंततः वर्ष 1982 में हुई जनगणना में कई लाख लोगों के मारे जाने की पुष्टि हुई।

सांस्कृतिक क्रांति

द ग्रेट लीप फारवर्ड की विफलता और इसकी योजना की अदूरदर्शिता से पनपी त्रासदी को चीनी वामपंथी पार्टी का लाल सितारा स्वीकारने को तैयार ना था और इस त्रासदी के केवल 6 वर्षों के उपरांत ही माओ के पास चीन को साम्यवादी राष्ट्र के रूप में परिवर्तित करने की ऐसी योजना तैयार थी जो चीनी राष्ट्र की सांस्कृतिक जड़ो से सदैव के लिए उसे विमुक्त करने वाला था

16 मई 1966 को माओ ने '16 मई की सूचना' शीर्षक से एक विज्ञप्ति जारी की जिसमे माओ ने स्पष्ट रूप से कहा कि राष्ट्र के महत्वपूर्ण वैचारिक एवं वैज्ञानिक आयामों का नेतृत्व अब सर्वहारा वर्ग के हाथ मे नहीं रह गया है और इसका संचालन कर रहे लोग साम्यवाद विरोधी है।

माओ ने अपनी इस अधिसूचना में स्पष्ट किया कि ऐसे लोगों के विरुद्ध निर्णायक संघर्ष करना होगा और इस संघर्ष का नेतृत्व करने के लिए माओ ने विद्यार्थियों एवं विश्वविद्यालयों के छात्रों का आह्वान किया। पहले से सुनियोजित रूप से गठित किए गए राजनेताओं के बच्चों एवं उनके मित्रों ने इस तथाकथित क्रांति की कमान संभाली और माओ के अतिवादी विचारों की व्यवहारिक अभिपूर्ती करने वाले रेड गाड्र्स का गठन किया गया

रेड गार्ड्स हाथों पे लाल पट्टी बांधते माओ के पोस्टर्स लगाते, गीतों कविताओं, एवं नारों से क्रांति की अलख जगाते। उनका उद्देश्य अपने नेता के तथाकथित क्रांतिकारी विचारों से पूरे चीन को रंग देना था। 18 अगस्त को माओ ने हजारों रेड गार्ड्स को तियानमेन चौक से संबोधित किया।

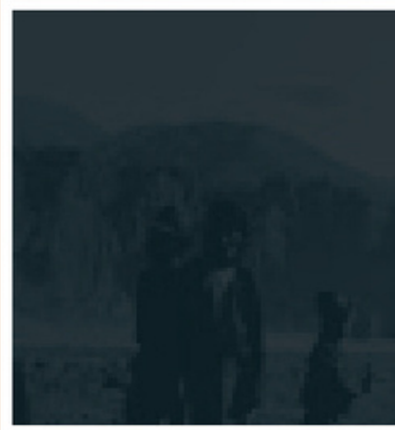

युवाओं के इस समूह ने सड़को पर जमकर हिंसा और रक्तपात किया, पुस्तकालयों में आग लगा दी गई, सैकड़ों प्राध्यापकों को सड़कों पर दौड़ा कर उनकी बर्बरता से हत्या कर दी गई यहां तक कि छात्रों की इस मुहिम का विरोध करने वाले उनके अभिभावकों को भी सार्वजनिक रूप से उन्ही के बच्चों द्वारा अपमानित किया गया। चीन अब सांस्कृतिक क्रांति के बीचों बीच खड़ा था।

माओ जानते थे कि अब उनके उद्देश्यों की अभिपूर्ती हो चुकी है इसलिए उसने 1968 में रेड गार्ड्स को भंग कर दिया। दो वर्षों के उपरांत चीनी समाज को हिंसा के जोर पर जबरन साम्यवादी व्यवस्था बनाने के उद्देश्य से प्रारंभ की गई इस तथाकथित क्रांति को आधिकारिक रूप से समाप्त कर दिया गया हालांकि माओ की लगाई हुई आग अगले 7-8 वर्षों तक अनाधिकारिक रूप से जारी रही। परिणामस्वरूप चीन की एक पूरी पीढ़ी इस क्रांति की भेंट चढ़ गई कालांतर में इसे चीन की खोई हुई पीढ़ी कहा गया।

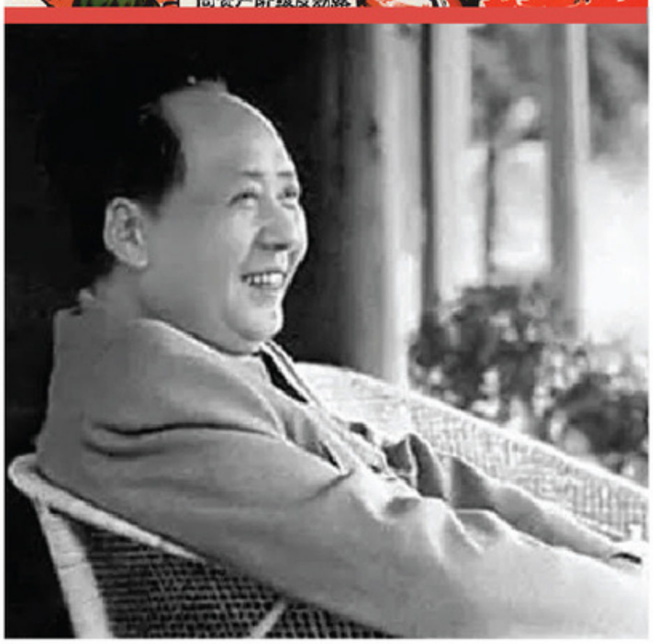

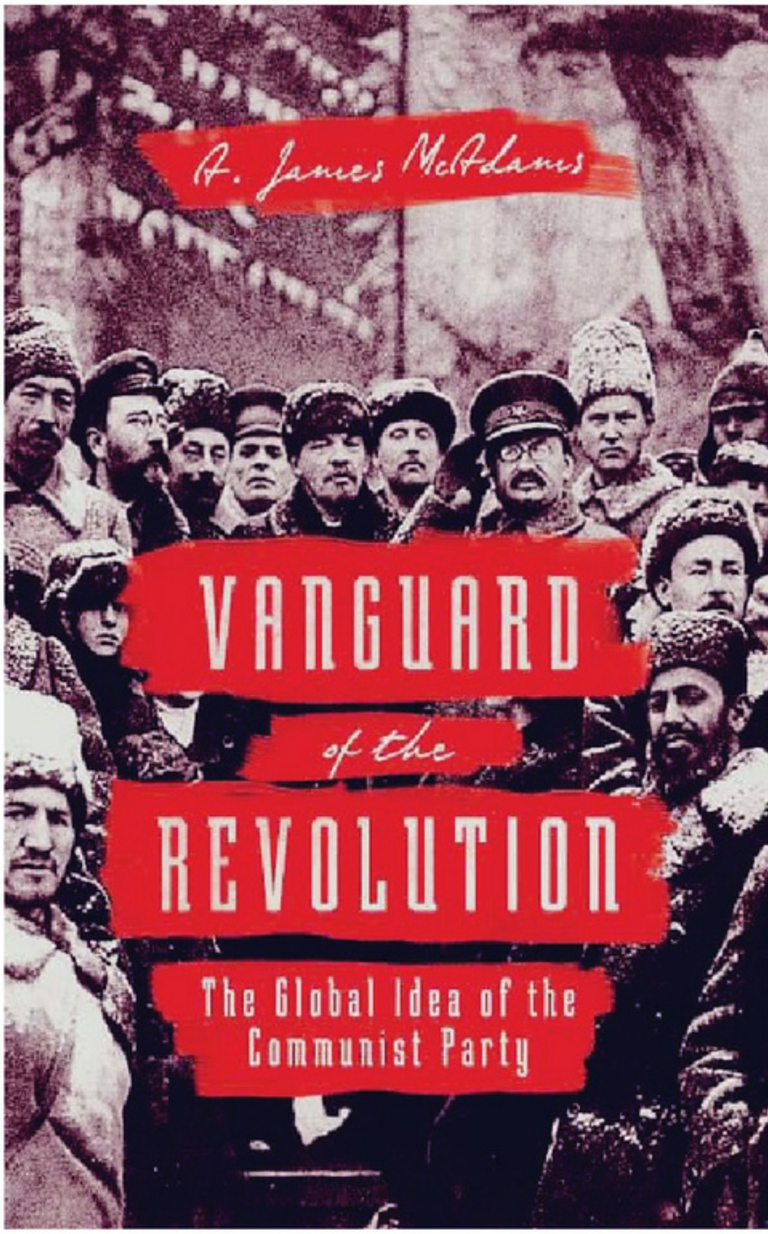

आतंक के साए में

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी मूलतः एक लेनिनि शैली की पार्टी है जिसकी स्थापना के समय ही पार्टी संगठन को राजनैतिक, वैचारिक, एवं संगठनात्मक श्रेणियों में विभक्त किया गया।

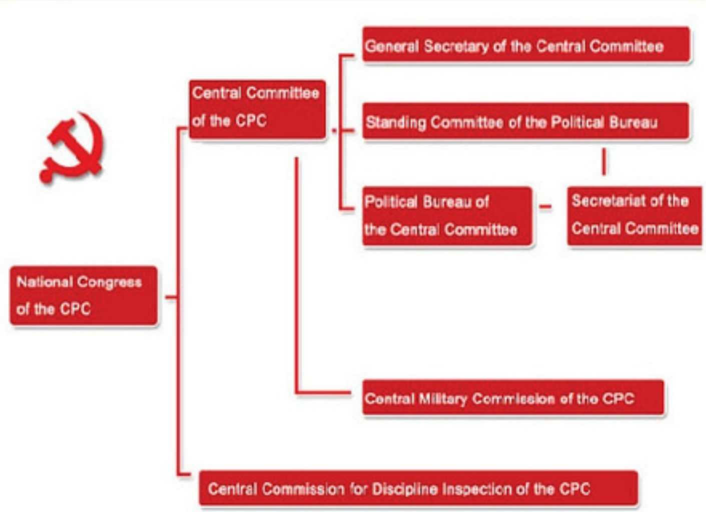

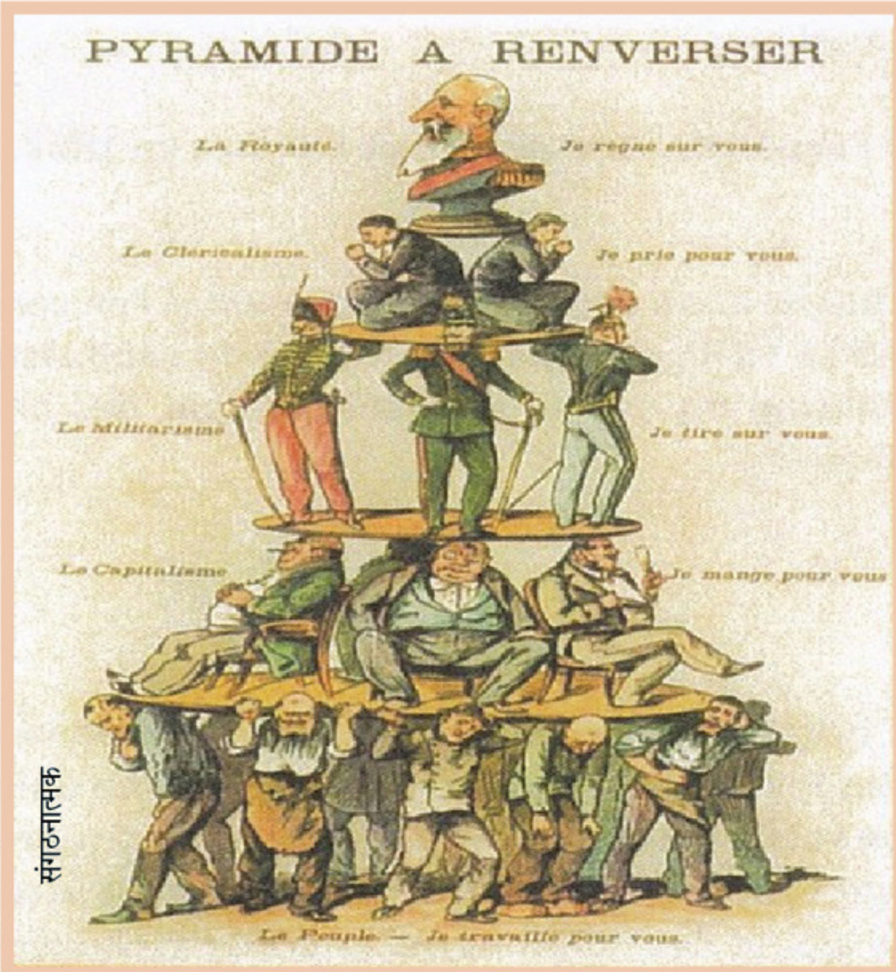

इनमें से वैचारिक श्रेणी (आयाम) पार्टी की दार्शनिक नींव है, राजनैतिक श्रेणी का उद्देश्य पार्टी को सत्ता में बनाए रखना है जबकि संगठनात्मक श्रेणी पार्टी की नीतियों की स्वीकारता के लिए वातावरण का निर्माण करने एवं समाज पर कठोर नियंत्रण बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहती है

संगठनात्मक श्रेणी यह सुनिश्चित करती है कि पार्टी का हित सर्वोपरि रहे, मानवीय संवेदनाओं से भी ऊपर, पार्टी मानती है कि मानवीय स्वभाव अथवा संवेदनाएं परिवर्तनशील है किंतु पार्टी का हित के प्रति समर्पण परिवर्तनशील नहीं हो सकता ये स्थायी है इसपे विमर्श या तर्क वितर्क की गुंजाइश नहीं

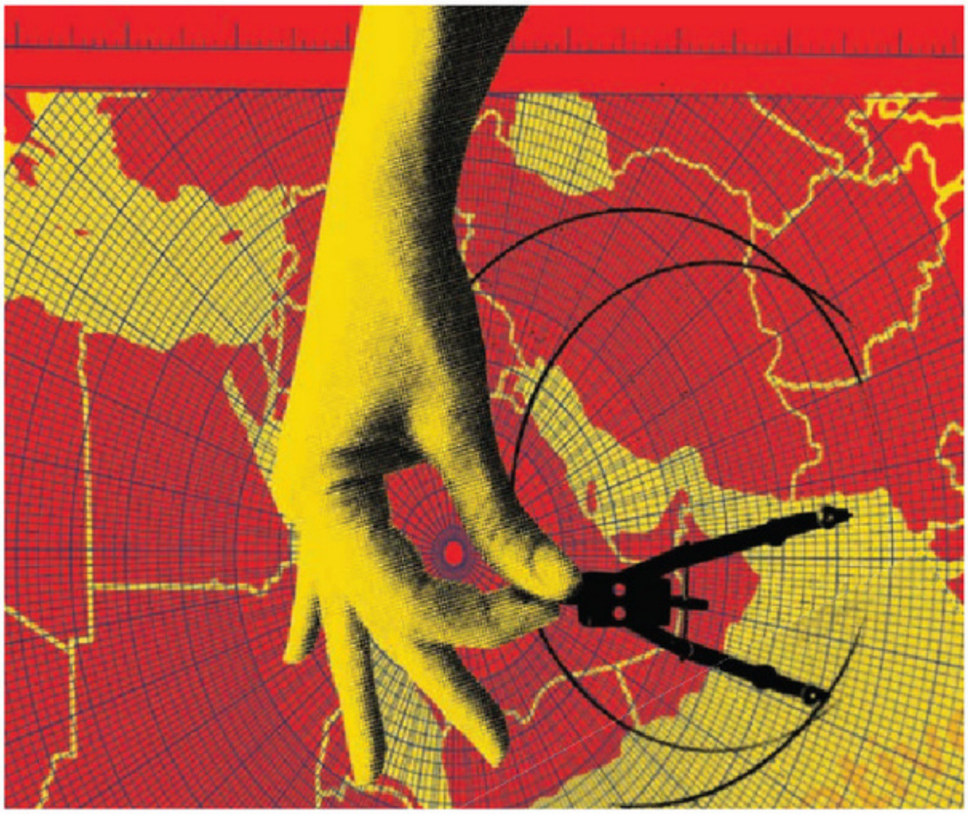

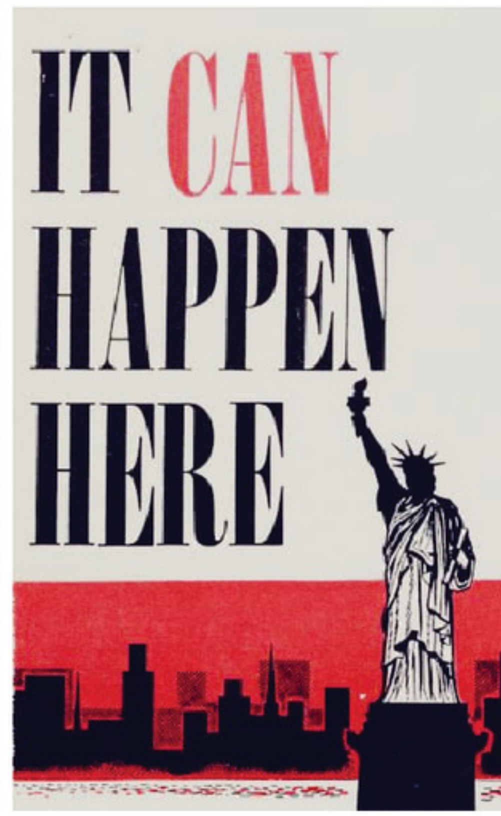

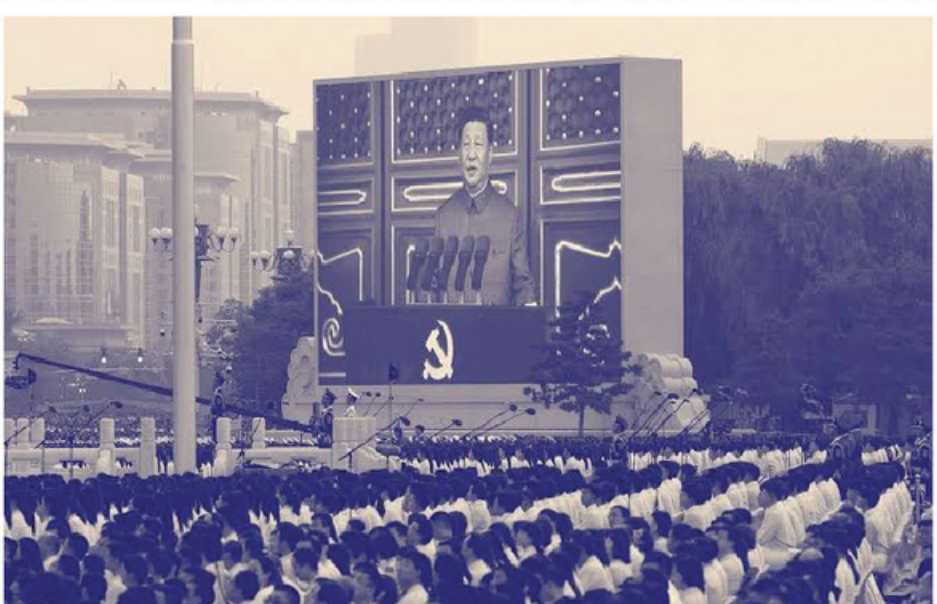

पार्टी के संघर्ष के दौर, उसके उत्थान एवं सांस्कृतिक क्रांति तक ऐसे अगणित साक्ष्य हैं जब पार्टी के प्रति समर्पण की इसी भावना को प्रमाणित करने करने के लिए पार्टी कैडरों ने अपने ही साथियों के परिजनों की निर्मम हत्या की हो, यह पार्टी के मूल संस्कार हैं, जो पार्टी के दीर्घकालिक प्रशिक्षण केंद्रों से लेकर विश्वविद्यालयों तक मे कठोरता से कैडरों के चरित्र में उतारे जाते हैं, इस पर विमर्श या प्रतिकार आपको देशद्रोही की श्रेणी में ले आएगा।

पार्टी की यह श्रेणी ही पार्टी का मूल स्वरूप है जो नीचे से ऊपर तक एक विशाल पिरामिड की तरह एकीकृत हैं, कर्मचारी, अधिकारी, मजदूर, किसान, उद्योगपति, युवा, वृद्ध, पुरुष, महिला ये सभी एकीकृत हैं इसलिए यहां मौलिक अधिकारों या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अस्तित्व नहीं, ये बेजोड़ है और उतना ही कठोर, संवेदनहीन और अमानवीय भी, वास्तविकता में यही चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की आत्मा है। कुल मिलाकर अगर आप चीन में जन्मे हैं तो पार्टी साए की तरह आपके साथ चलती है और एक नागरिक से लेकर सत्ता के शीर्ष पर बैठा व्यक्ति जीवनपर्यंत इस साए की निगरानी में है

ना एक विचार ना एक सिद्धांत

वर्ष 1941 में मिली सत्ता के उपरांत साम्यवादी समाज बनाने के नाम पर करोड़ो लोगों की हत्याएं करने वाली सीसीपी के ये लेनिनवादी/माओवादी सिद्धांत केवल 3 दशकों में ही विकास के लिए लाई गई नई चीनी नीतियों की भेंट चढ़ गए और चीन ने अनौपचारिक रूप से पूंजीवादी व्यवस्था की ओर अपने कदम बढ़ा दिए

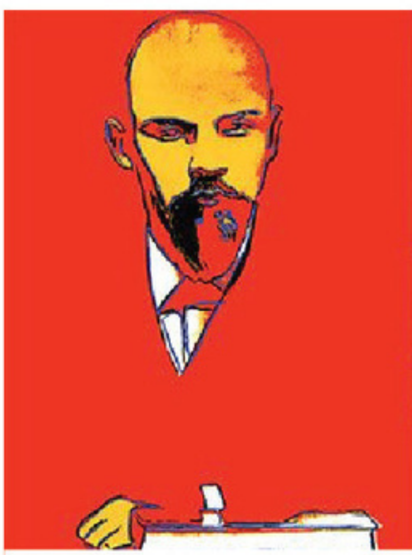

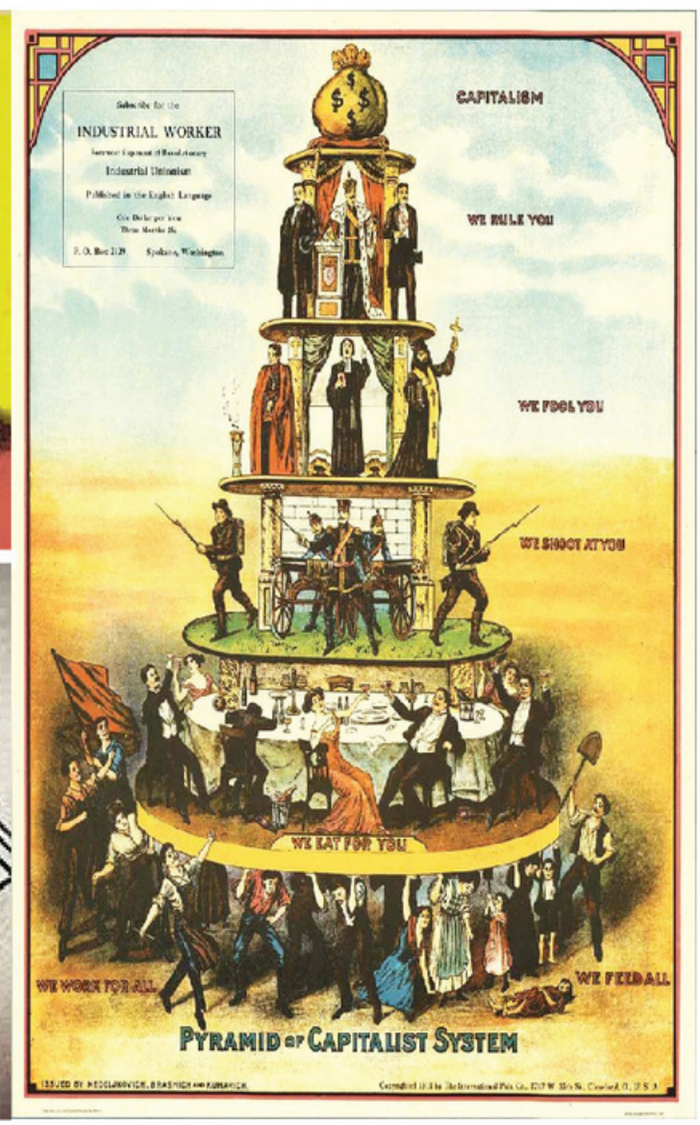

पार्टी के आदर्श पुरुष माओ की मृत्यु के उपरांत चीन कि सत्ता संभालने वाले डेंग शाओपिंग ने चीनी साम्यवादी नीति जिसने अब तक काम से कम 4 करोड़ से अधिक लोगों को काल के गर्त में पहुंचाया था से किनारा करते हुए नीतियों में अमूलचूल परिवर्तन किए वर्ष 1979 में चीन ने विदेशी निवेश के रास्ते खोले दुनिया के मजदूरों एक हो के सिद्धांत पर विश्वास करने वाला चीन अब दुनिया भर में सबसे सस्ते मजदूर उपलब्ध करा रहा था हालांकि कागजो पर क्रांति अब भी जारी थी

वर्ष 2002 में चीन विश्व व्यापार संगठन का सदस्य बना और तब से अब तक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था उसकी नब्जों में काबिज होती जा रही है। इसे ऐसे समझे कि चीन की अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र की सहभागिता (जो साम्यवादी सिद्धांतों में सख्त रूप से प्रतिबंधित है) चीन के सकल घरेलू उत्पाद में 60 प्रतिशत, नवाचारों में 70 प्रतिशत, शहरी क्षेत्रों के रोजगारों में 80 प्रतिशत एवं नई नौकरियां सृजित करने में 90 प्रतिशत है

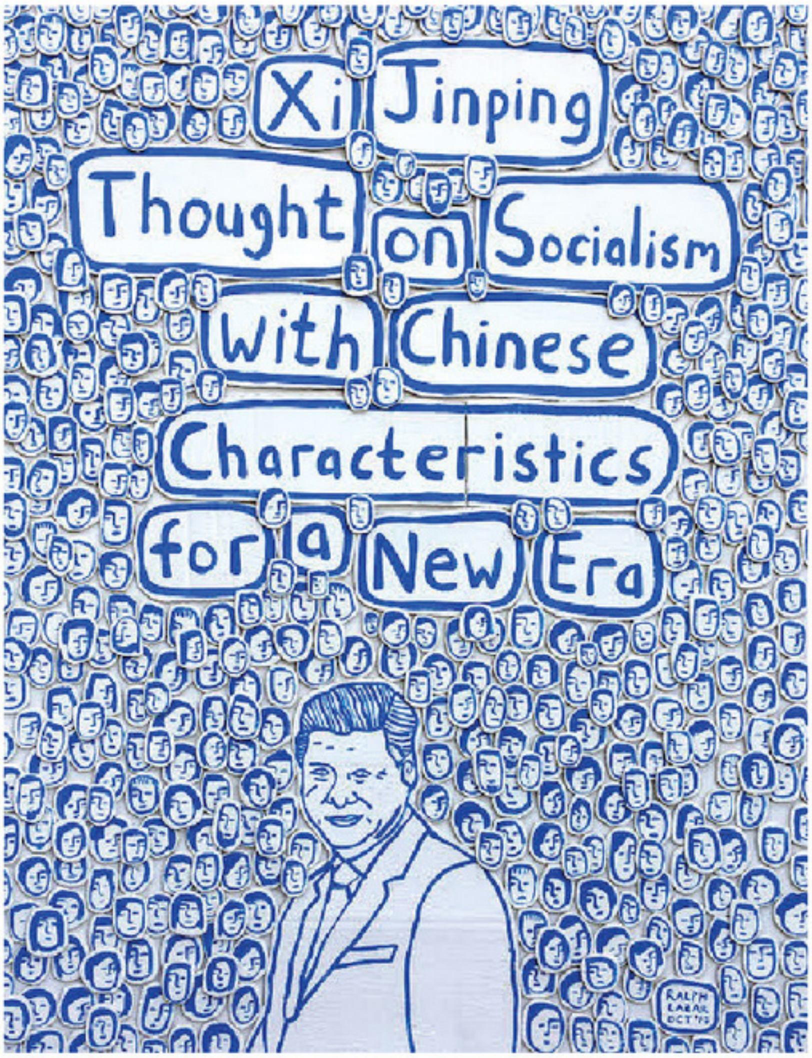

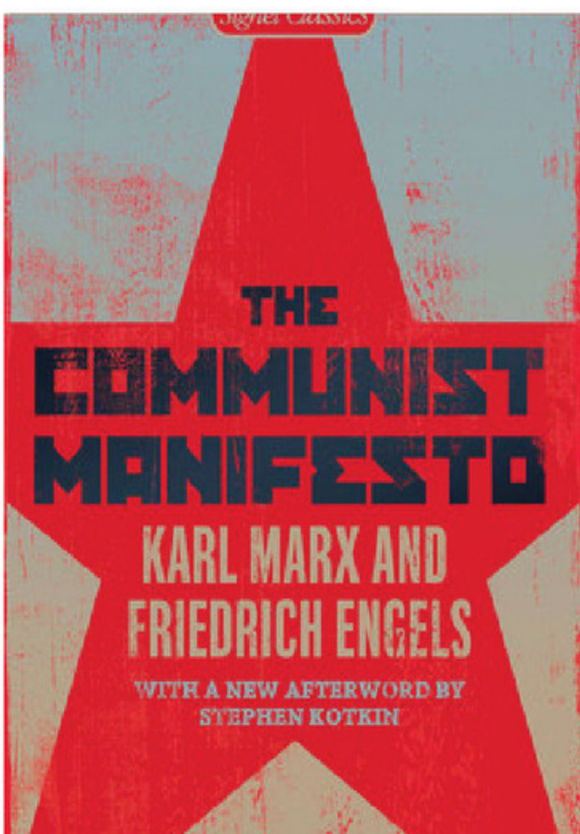

पिछले तीन दशकों में ही शहरी क्षेत्रों में चीनी निजी क्षेत्र की भूमिका में तकरीबन 70 फीसदी एवं चीन के निर्यात में निजी क्षेत्र की सहभागिता 48 फीसदी बढ़ी है, सीसीपी के नए युग पुरूष जिनपिंग इसे विशिष्ट चीनी विशेषताओं वाला समाजवाद बता कर तथाकथित महान साम्यवादी सिद्धांतों को ताक पर रख कर किए गए इस परिवर्तन पर मुँह चुरा लेते हैं, हालांकि साम्यवादी नियंत्रण में पनपे इस 'चीनी विशेषता वाले पूंजीवाद' के अपने गंभीर दुष्परिणाम है

मजदूरों और किसानों के मध्य स्वामित्व के साझे अधिकारों की बात कर खूनी संघर्ष से सत्ता हथियाने वाले चीन की संसद में 700 से भी अधिक अरबपति हैं, हालांकि बड़ी विडंबना यह है कि तथाकथित समानता के अधिकारों की पैरोकार रही सीसीपी ने सात दशकों के सत्ता के उपभोग के उपरांत चीन को दुनिया की सबसे अधिक असमानता वाले राष्ट्रों की सूची में ऊपर बनाए रखा है

भविष्य की डगर

मजदूरों, किसानों एवं शोषित वर्गों के साझे स्वामित्व और सबसे बढ़कर समानता के अधिकारों की बात कर के सत्ता में आई सीसीपी वास्तविकता में बीती सदी में करोड़ो लोगो के नरसंहार और रक्तपात की धुरी बनकर उभरी है

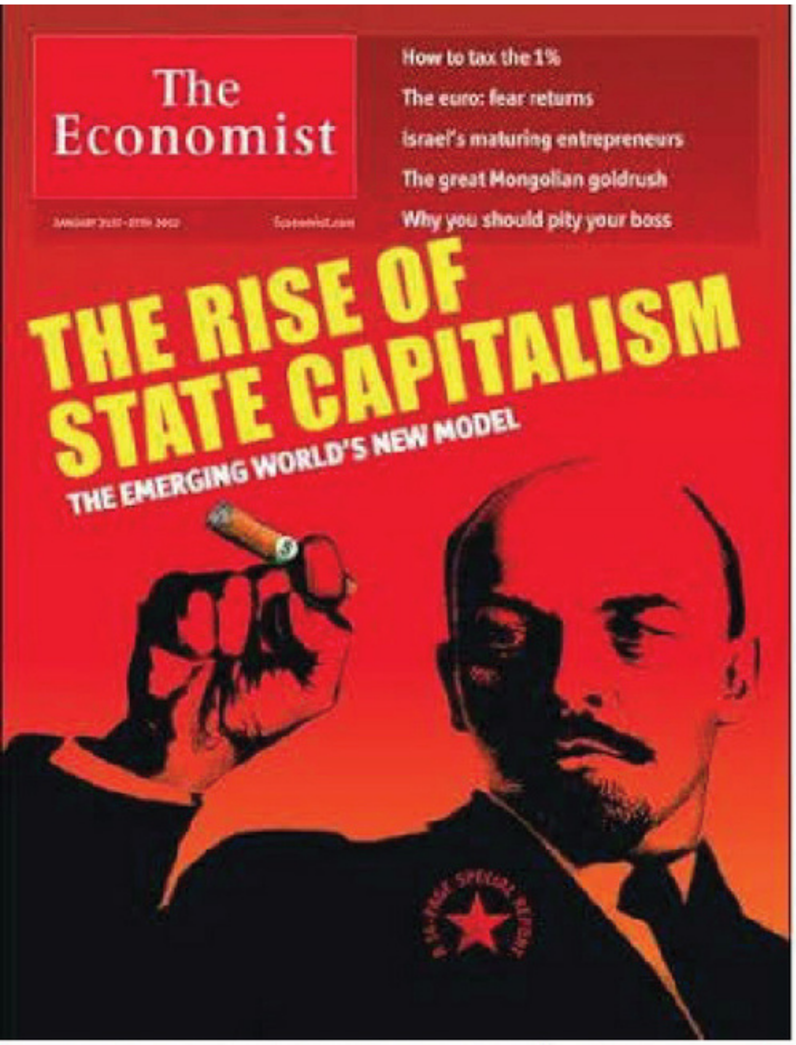

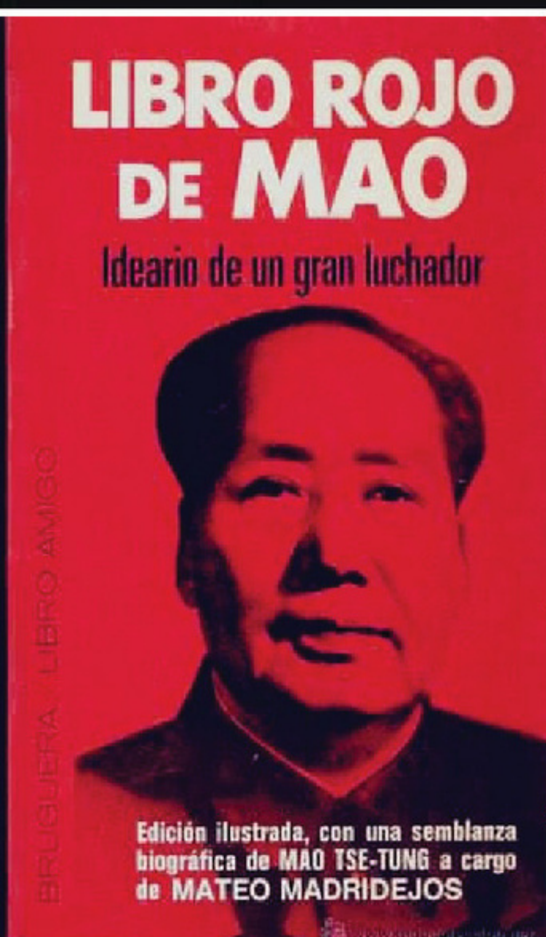

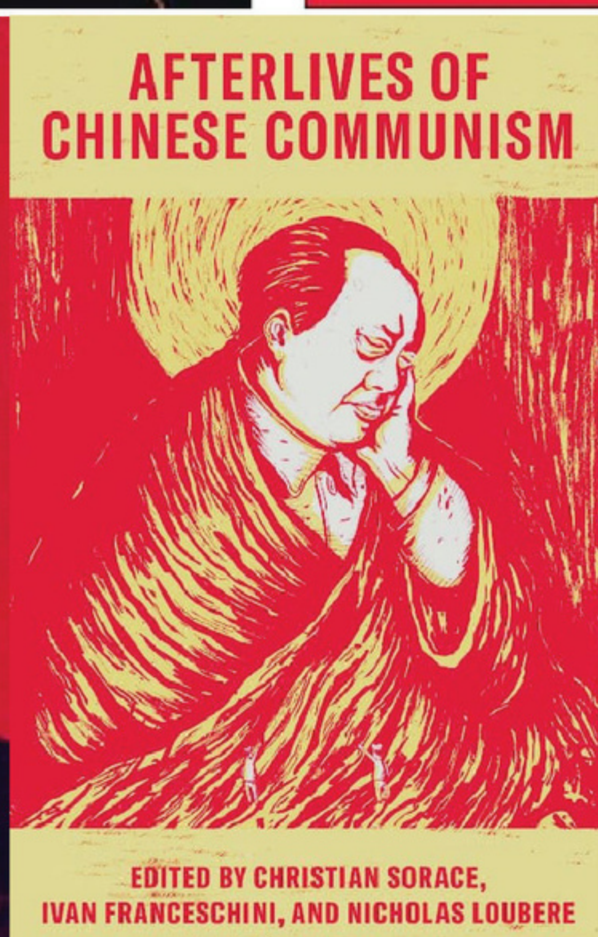

यह भी की साम्यवाद के लोमहर्षक सिद्धांतों को अपनी मूल विचारधारा मानने वाली पार्टी ने सत्ता में आने के उपरांत केवल 3 दशकों के भीतर ही इन सिद्धांतों को तिलांजलि दे दी

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी यह दावा करती है कि उसका उदय एक सफल समाजवादी गणराज्य के रूप में हुआ है जबकि उसके नागरिक मौलिक अधिकारों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से पूर्णतया वंचित है, पार्टी साम्यवादी व्यवस्था का दंभ भरती है जबकि उसकी अर्थव्यवस्था पूंजीवाद के खम्भो पर टिकी है, वो समानता की बात करती है जबकि पार्टी ने चीन के अल्पसंख्यकों की सांस्कृतिक पहचान तक मिटा दी है

सीसीपी की अगुवाई में चीन का उदय विशुद्ध रुप से एक निष्ठुर, क्रूर, एवं संवेदनहीन साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में हुआ है जहां पिछली एक सदी से विभिन्न तानाशाहों ने अकल्पनीय एवं अमानवीय बर्बरता की है

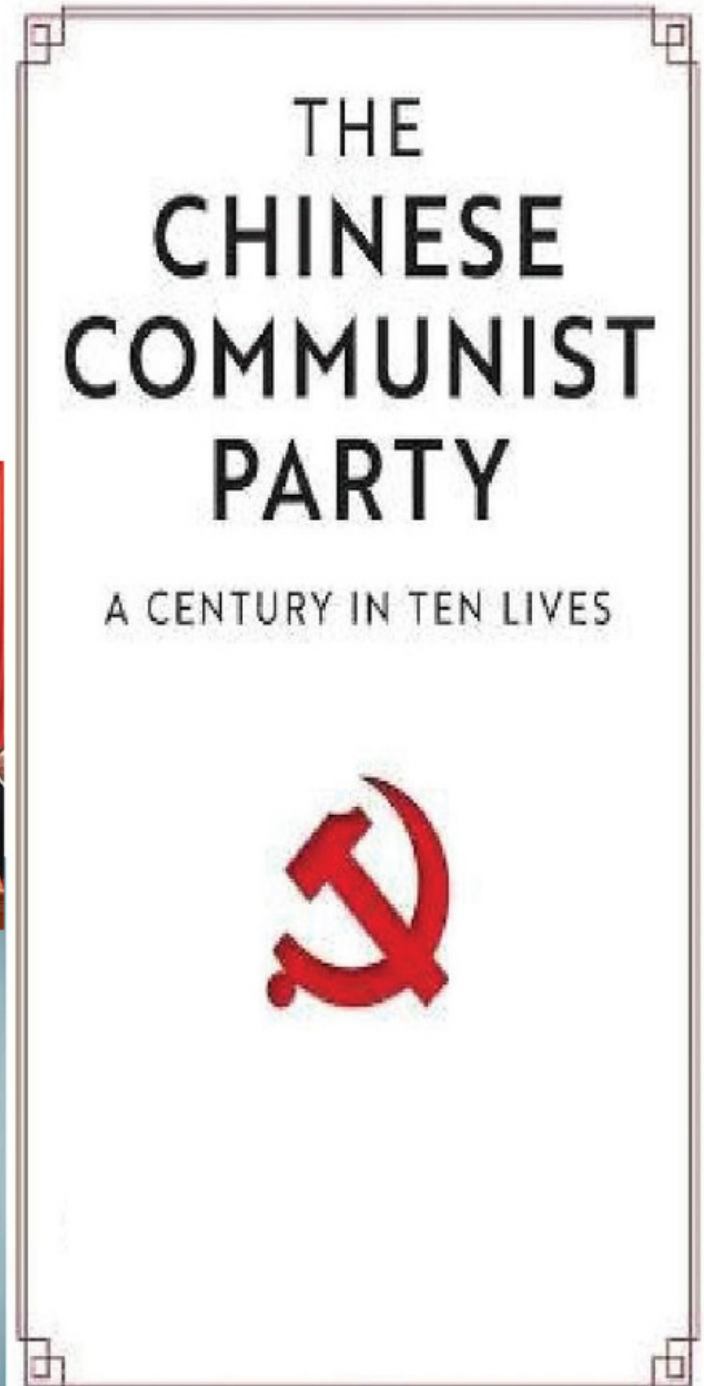

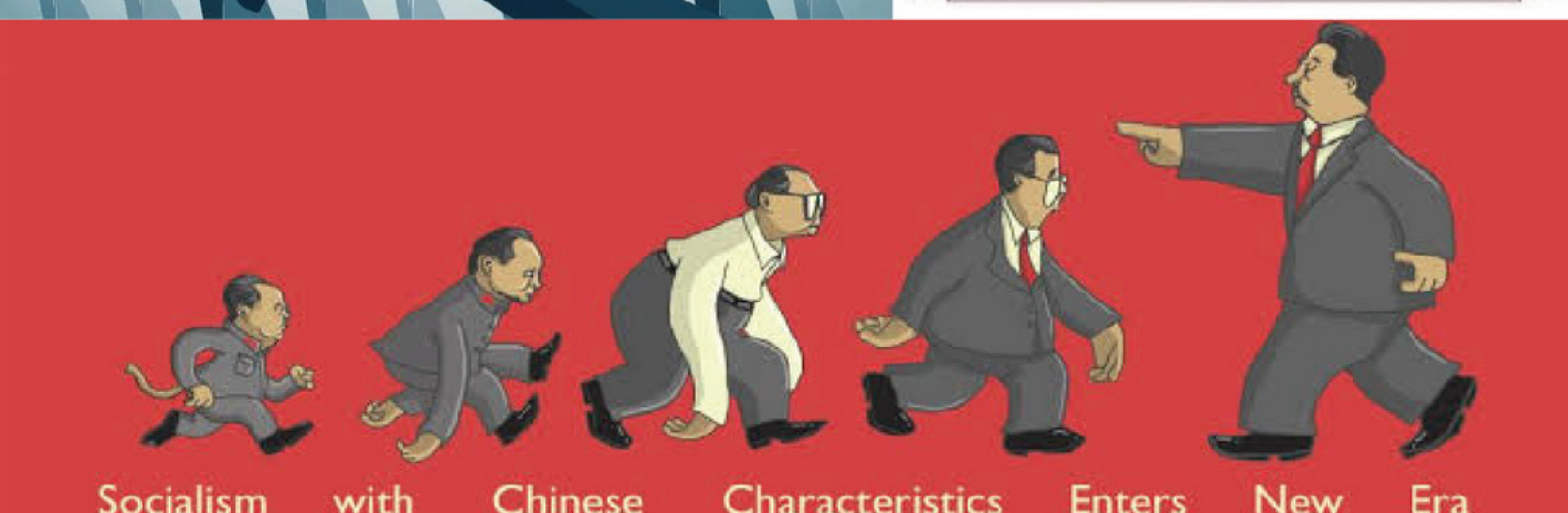

फलस्वरूप चीन में अब धीरे धीरे एक ऐसे वर्ग का प्रादुर्भाव हुआ है जिसमे लोकतांत्रिक व्यवस्था एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकारों को लेकर आक्रोश बढ़ता जा रहा है, जनमानस का यह आक्रोश स्वस्फूर्त है और अपने मौलिक अधिकारों की अभिपूर्ती के लिए यह कभी भी जनसंघर्ष में परिवर्तित हो सकता है

हालांकि तब तक के लिए मार्क्स एवं लेनिन के दर्शन को आत्मसात कर के रक्तपिपासु छद्म साम्यवादी व्ययस्था विकसित करने के नाम पर एक शताब्दी पूर्व प्रारंभ हुई "क्रांति जारी रहेगी"

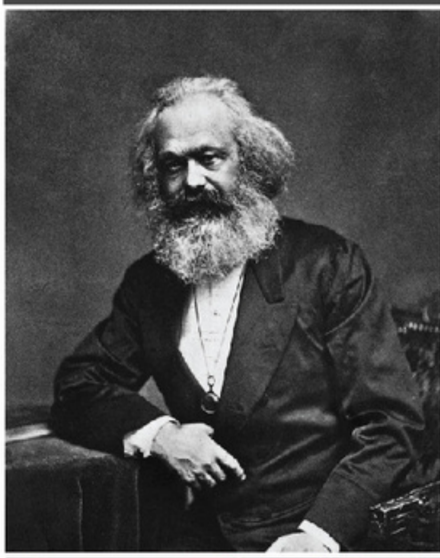

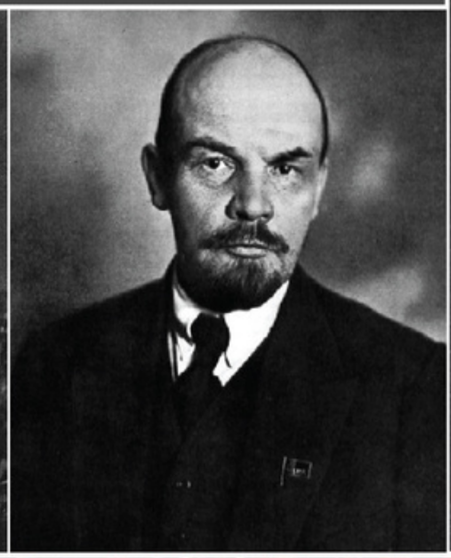

टाइम लाइन

1917 से 1920

वर्ष 1917 से 1920 के मध्य, युवा क्रांतिकारी(वामपंथी विचार में) एवं व्याख्यानकर्ता 'ली डझाओ' द्वारा बेजिंग में 'मार्क्सिस्ट अध्ययन समाज' का गठन किया गया, जिसका उद्देश्य चीन में मार्क्सवादी विचारधारा के लिए भूमि तैयार करना था

南陈北李 相约建党

陈独秀

李大钊

1920

रूस में 'बोल्शेविक' की वामपंथी सरकार द्वारा क्रांति के प्रसार के लिए 'विकिंस्की' की अगुवाई में राजनयिकों के एक प्रतिनिधिमंडल को बेजिंग भेजा गया, जहां उन्होंने 'ली डझाआ' और 'चेन डकिस्यु' से भेंट कर उन्हें 'कोमिन्टर्न' की योजना से अवगत कराया

1920

अगस्त में कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के दूसरे कांग्रेस अधिवेशन में चीन के संदर्भ में नीति तय करते हुए कम्युनिस्ट इंटरनेशनल द्वारा चेन और ली को वित्तिय सहायता उपलब्ध कराई गई

1920 - 21

रूसी सहायता के बल पर चेन ने अपनी न्यू युथ पत्रिका का प्रकाशन पुनः प्रारंभ किया, जिसके आलेखों के माध्यम से लोकत्रांतिक समाजवाद एवं औपनिवेशिक पूँजीवाद को लक्षित करते हुए साम्यवाद (वामपंथ) का व्यापक प्रचार प्रसार किया गया

1921

ली और चेन द्वारा शंघाई, वुहान, ग्वांगझू एवं जिनान जैसे शहरों में कम्युनिस्ट समूहों की स्थापना के साथ ही श्रमिक संगठन, श्रमिक क्राम एवं वैचारिक रूप से पूंजीवादी व्यवस्था विरोधी संस्थानों की नींव रखी गई, चेन और ली के इन्ही सतत प्रयासों के फलस्वरूप जनमानस में अवास्तविक साम्यवादी विचारधारा के प्रति आकर्षण बढ़ा, जिसके फलस्वरूप जुलाई 1921 में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई, 23 से 31 अगस्त को शंघाई में चेन एवं ली कि अगुवाई में प्रथम राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की औपचारिक रुप से घोषणा हुई। इसी अधिवेशन में 13 सदस्यों वाली समिति द्वारा मार्क्स के सिद्धांतों से प्रेरित साम्यवादी विचारधारा के आदर्श संस्करण को सर्वसम्मति से स्वीकृति देते हुए इसे पार्टी के संविधान के रुप में घोषित कर दिया गया

1924

पार्टी को 'सन यत सेन' की अगुवाई वाली कुओमिन्तांग (केएमटी) अथवा 'चीनी राष्ट्रवादी पार्टी' से औपनिवेशिक शक्तियों के विरुद्ध हाथ मिलाना पड़ा, जिसके उपरांत संयुक्त मोर्चे का गठन कर उत्तरी अभियान चलाया गया

1926 - 27

केएमटी एवं सीसीपी के गठबंधन में फूट पड़ी एवं तीन वर्षो में करीबन 3 लाख वामपंथी विचारधारा के समर्थन करने वाले लोगों का नरसंहार हुआज

1927

अगस्त में गठबंधन के टूटने के साथ ही चीनी गृह युद्ध की शुरुवात हुई, 1 अगस्त को राष्ट्रीय क्रांतिकारी सेना से पृथक होकर पार्टी कैडरों द्वारा चीनी लाल सेना (भविष्य की पीएलए) की स्थापना की गई, पार्टी की आपातकालीन बैठक में माओ ने कहा **'सत्ता बंदूक की नली से निकलती है'**

1929

माओ के नेतृत्व में वामपंथी लाल सेना ने चीन के जियांग शी प्रान्त के रुइजिन पे कब्जा किया

1930

पार्टी ने लायजेन लाइन को वैचारिक मंजूरी दी और शहरी मजदूरों पर हमले प्रारंभ किया, जून में हुनान सोवियत की स्थापना की गई

1931

पार्टी का नेतृत्व 28/17 बोल्शेविक एवं वांग मिंग के हाथ मे आया, माओ के नेतृत्व में चीनी गणतांत्रिक सोवियत की स्थापना हुई

1934

चीनी राष्ट्रवादी सरकार के पांचवे घेराव को तोड़ कर 16 अक्टूबर को माओ की अगुवाई में प्रसिद्ध लांग मार्च प्रारंभ हुआ

1935

जुनयी सम्मेलन में लाल सेना का नेतृत्व आधिकारिक रूप से माओ को सौंपा गया

1936

जियांग जिएशि के अपहरण ने जापानियों के विरुद्ध राष्ट्रवादी एवं सीसीपी के संयुक्त मोर्चे की आधारशिला तैयार हुई, पार्टी मुख्यालय को बान से यान स्थानांतरित किया गया

1937

जापानियों के विरुद्ध द्वितीय संयुक्त मोर्चे के गठन और युद्ध की घोषणा

1940

माओ ने नए लोकतंत्र के सिद्धांत को प्रतिपादित किया

1941

द्वितीय संयुक्त मोर्चे के अंत

1945

सीसीपी ने आधिकारिक रूप से माओ के सिद्धांतों को अपना वैचारिक दर्शन स्वीकार किया

1946

चीनी लाल सेना का औपचारिक रूप से पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के रूप में गठन किया गया

1949

पीएलए ने बीजिंग और नानजिंग पर कब्जा जमाया, 1 अक्टूबर को माओ ने आधिकारिक रूप से पीपुल्स रिपब्लिक आफ चाइना की घोषणा की

1949 - 50

माओ की अगुवाई में सत्ता संभालते ही पार्टी ने तथाकथित भूमि सुधारो की घोषणा की जिसमे ग्रामीण न्यायाधिकरण स्थापित कर कम से कम 10 लाख लोगों की हत्याएं की गई, शोधों में आँकड़ो को 40 लाख तक बताया गया

1950 - 53

पार्टी ने कोरियाई युद्ध में नार्थ कोरिया को सैन्य सहायता दी जिसमे कम से कम एक लाख चीनी स्वयंसेवक मारे गए

1957

पार्टी द्वारा दक्षिणपंथी विरोधी मुहिम में पूरे चीन के बुद्धिजीवियों एवं उदारवादियों की षड्यंत्र के तहत हत्याएं की गई

1958

औधोगिकीकरण के नाम पर माओ ने अतिवादी वामपंथी नितियों को लागू किया परिणामस्वरूप चीन में आकाल पड़ा, 3 वर्षों के काल खंड में द ग्रेट लीप फ़ारवर्ड में कुल 30 लाख लोग अतिवामवादी नीतियों के कारण काल के गर्त में समाहित हो गए

1959

चीन ने तिब्बत पर कब्जा करने के लिए ल्हासा ओर आक्रमण किया तिब्बती स्वतंत्रता सेनानियों के आंदोलन को बर्बरता से कुचला गया, तिब्बती धर्म गुरु दलाई लामा भारत मे शरण लेने को बाध्य हुए

1962

हिंदी-चीनी भाई भाई का नारा देने वाली पार्टी ने अपनी साम्राज्यवादी नीति के तहत भारत पर आक्रमण किया अक्साई चीन समेत लद्दाख के बड़े हिस्से को कब्जाया

1966 - 76

चीनी संस्कृति मिटाने एवं विरोधियों के दमन के लक्ष्य से पार्टी ने सांस्कृतिक क्रांति की शुरुवात की, अगले एक दशक में सांस्कृतिक परिवर्तन के नाम पर लगभग 5-20 लाख लोगों की बर्बरता से हत्याएं की गई

1976

माओ की मृत्यु के साथ ही पार्टी के आतंक के प्रथम अध्याय की समाप्ति हुई, पार्टी में गैंग आफ फोर का वर्चस्व खत्म हुआ एवं डेंग शाओपिंग ने चीन की सत्ता संभाली

1978

करोड़ो लोगों की हत्याएं करने के उपरांत पार्टी ने आर्थिक रुओ से अति साम्यवादी विचारों से किनारा कर आर्थिक सुधारों एवं उदारवादी अर्थव्यवस्था की ओर कदम बढ़ाए

1989

युवाओं एवं शोषित वर्ग में पनप रही मौलिक अधिकारों एवं लोकतंत्र की भावना का प्रतिनिधित्व कर रहे हज़ारों युवाओं को तियानमेन चौक नरसंहार में टैंकों से कुचल दिया गया, लोकतंत्र की मांग कर रहे छात्रों का बर्बरता से दमन किया गया

1991

पार्टी ने एशिया में आई मंदी की मार से राज्य अधिकृत समूहों के आंशिक निजीकरण की स्वीकृति दी

2001

पार्टी ने आर्थिक संपन्नता की दृष्टि से वामपंथी अर्थव्यवस्था को तिलांजलि देकर पूँजीवाद की ओर मजबूती से कदम बढ़ाए, चीन विश्व व्यापार संगठन का सदस्य बना

WORLD TRADE ORGANIZATION

2008

ल्हासा में चीनी दमन के विरुद्ध खड़े हुए तिब्बतियों को बर्बरता से कुचला गया, पार्टी ने तिब्बतियों को लक्षित कर के उनके विरुद्ध विशेष मुहिम की शुरुवात की, कालांतर में तिब्बती धार्मिक स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करने, उनके धर्मस्थलों को नष्ट करने एवं बलपूर्वक मंदारिन भाषा थोपकर तिब्बती अस्मिता को मिटाने का प्रयास किया गया

2009

शिनजियांग प्रान्त में चीनी सरकार की बर्बरता के विरूद्ध हुए दंगो के उपरांत पार्टी ने उइगर समुदाय का दमन प्रारंभ किया, कालांतर में 10 लाख से भी अधिक मुस्लिमों को यातना शिविरों में यातनाएं देने, उनके मानव अंगो की तस्करी, एवं उनकी धार्मिक स्वतंत्रता को प्रतिबंधित कर दिया गया

2012 - 13

पार्टी ने शी जिनपिंग को अपना जनरल सेक्रेटरी चुना, अगले वर्ष उन्हें राष्ट्रपति घोषित किया गया

2013 - 16

शी जिनपिंग ने भ्रष्टाचार विरोधी मुहिम की शुरुआत करते हुए माओ के तर्ज पर राजनीतिक प्रतिस्पर्धियों को लक्षित कर के उन्हें हटाना प्रारंभ किया

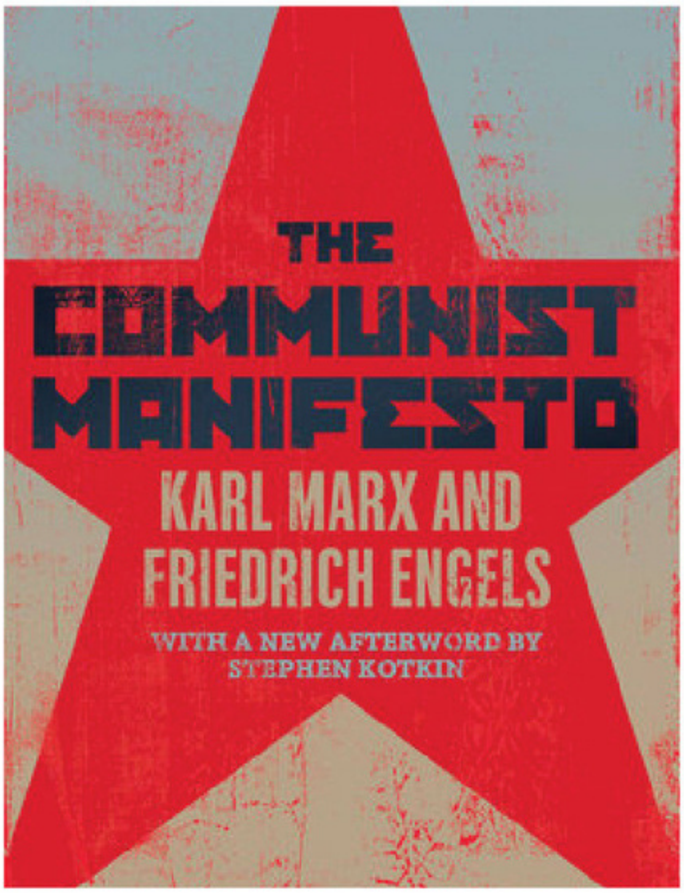

2017

पार्टी ने जिनपिंग के कथित चीनी विशेषताओं वाले समाजवाद को संविधान में स्थान दिया, जिनपिंग ने अपनी अति महत्वाकांक्षी परियोजना बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव पर हस्ताक्षर किए

2018

पार्टी ने राष्ट्रपति कार्यकाल की सीमा में परिवर्तन को स्वीकृति दी, शी जिनपिंग के जीवनपर्यंत चीन के राष्ट्रपति बने रहने का मार्ग प्रशस्त किया गया

2019 - 20

चीन के वुहान लैब में कोरोना वायरस की उत्पत्ति हुई जो कुछ ही महीनों में वैश्विक महामारी बनकर उभरा, विभिन्न शोधों में इसके चीनी सेना के एक कृत्रिम जैविक हथियार होने की पुष्टि हुई है जिस पर पार्टी का दुष्प्रचार तंत्र जोर-शोर से भ्रम फैला रहा

2021 - 22

पार्टी की देख-रेख में पिछले एक दशकों से अल्पसंख्यकों के विरुद्ध चलाए जा रहे यातना शिविरों में उनका दमन निर्बाध रूप से जारी है, अल्पसंख्यकों की सांस्कृतिक विरासत नष्ट कर पार्टी ने 2035 तक शत प्रतिशत मंदारिन भाषा के प्रयोग का लक्ष्य रखा है, पार्टी साम्राज्यवादी नितियों के तहत कर्ज जाल एवं सीमाओं पे अतिक्रमण को बढ़ावा दे रही है, विश्व पर एकल आधिपत्य एवं साम्यवादी विचारों के प्रसार के लिए पार्टी का सतत प्रयास तीव्र गति से प्रगतिशील है।

हमारे बारे में

दशकों से चली आ रही मीडिया की पक्षीय भूमिकाओं के बीच The Narrative World एक स्वतंत्र मीडिया समूह है जिसका मूल उद्देश्य राष्ट्रहित के विचारों को स्थापित करना, उसका प्रसार एवं उसका निर्माण करना है।

बीते सात दशकों में देश ने जैसी एक पक्षीय और एकरूपता की पत्रकारिता देखी है उस परिदृश्य से मूल पत्रकारिता को निकालकर हम भारतीय दृष्टिकोण के साथ सही विमर्श को खड़ा करने का प्रयास कर रहे हैं।

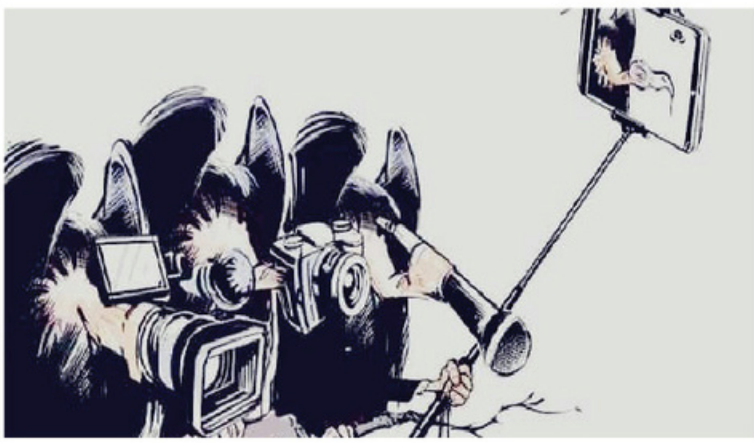

चूँकि आदि काल से ही एक राष्ट्र के रूप में भारत, भौगोलिक, प्राकृतिक, सामरिक एवं सबसे अधिक सांस्कृतिक दृष्टि से विश्व में सबसे श्रेष्ठ रहा है, जहाँ स्थापित हुए विमर्शों ने विश्व के दर्शन को नई दिशा दी है तो ऐसे में ये बेहद महत्वपूर्ण है कि हम समकालीन विषयों पर भी सघन विमर्शों के माध्यम से वैश्विक दर्शन की दिशा तय करने में अपनी गरिमामयी पारंपरिक भूमिका का सतत निर्वहन करते रहें, इन्ही उद्देश्यों को आत्मसात करके द नैरेटिव के माध्यम से हमारा प्रयास समकालीन विषयों पर वैश्विक पाठक वर्ग में तथ्यात्मक विश्लेषण के माध्यम से स्वतंत्र विमर्श स्थापित करने का है।

इसमें संशय नहीं कि मानवीय मूल्यों के संघर्ष के इस काल मे विश्व को सबसे अधिक खतरा वामपंथ/समाजवाद जनित साम्राज्यवाद तथा एक राष्ट्र के रूप में उसकी अगुवाई कर रहे चीन से है, ऐसे में ये अति आवश्यक है कि तथाकथित समानता के अधिकारों की आड़ में विश्व को क्रूर, तानाशाही अधिनायकवादी, निरंकुश सत्ता व्यवस्था के अधीन करने की विद्वेषित मानसिकता से आगे बढ़ रहे चीन के वास्तविक चरित्र को दुनिया के सामने उसके मूल स्वरूप में प्रतिलिक्षित किया जाए, इसी उद्देश्य से द नैरेटिव में हमारा प्रयास वामपंथ एवं उसकी अगुवाई कर रहे चीन की रक्तपोषित विचारधारा जनित कुकृत्यों के तथ्यात्मक विश्लेषण को स्वतंत्र रूप से सामने लाने का है

इसके अतिरिक्त भारत में आंतरिक सुरक्षा की दृष्टि से बीते पांच दशकों से माओवादी आतंकवाद (वामपंथी/कम्युनिस्ट उग्रवाद) एक बड़ा खतरा रहा है। इन बीते पांच दशकों से यह भारत को ना केवल अंदरूनी रूप से खोखला करने में लगा हुआ है अपितु इनके शहरी पैरोकारों द्वारा इसे जल, जंगल एवं जमीन के संरक्षण की क्रांति बताकर इनके द्वारा दशकों से किए जा रहे रक्तपात पर भी आम जनमानस को दिग्भ्रमित किया जा रहा है, हालांकि विडंबना तो यह है कि बावजूद कि इनका लक्ष्य सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से भारत के लोकतांत्रिक व्यवस्था को हटाकर चीन की तर्ज पर देश मे निरंकुशतावादी सत्ता व्यवस्था को स्थापित करना है समाज का एक बड़ा हिस्सा इनके इस षड्यंत्र से अनभिज्ञ है। हम द नैरेटिव के माध्यम से माओवाद/नक्सलवाद/वामपंथी उग्रवाद एवं उनके शहरी रणनीतिकारों के विषय पर विस्तार से खबरें एवं विश्लेषण प्रकाशित करते हैं, जिससे उनके कुकृत्यों एवं राष्ट्र विरोधी षड्यंत्र को आम जनता तक पहुंचा कर इनके वास्तविक चरित्र को सामने लाया जा सके

भारत में जनजाति समाज को लेकर भी विभिन्न तरह की भ्रांतियां फैलाई जाती हैं। जनजाति समाज की अनूठी सांस्कृतिक विरासत को मिटाने तथा केवल विशिष्ट पूजा पद्धति के नाम पर उन्हें सनातन संस्कृति से काटने के लिए भारत विरोधी विदेशी शक्तियां वर्षो से प्रयास कर रही हैं, इसमें जनजातीय बहुल क्षेत्रो में हो रहे धर्मांतरण से लेकर उनकी सांस्कृतिक पहचान मिटाकर उन्हें नई पहचान देने जैसे षड्यंत्रों को क्रियान्वित किया जा रहा है, द नैरेटिव के माध्यम से हमारा प्रयास इससे जुड़ी सभी गतिविधियों को सामने लाने है ताकि सनातन संस्कृति का अभिन्न हिस्सा व वाहक रहे जनजातीय समुदाय के विरुद्ध षड़यंत्रकारियों के स्याह चेहरे को उजागर किया जा सके

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में पूरा विश्व एक संक्रमणकाल से गुजर रहा है, भारतवर्ष में भी विदेशी शत्रु शक्तियों की गतिविधियां भारतीय जयचंदों के साथ मिलकर राष्ट्रहित के विषयों पर भ्रम फैलाकर इसे प्रभावी रूप से कमजोर करने की है। हम ऐसी भारत विरोधी गतिविधियों को ना केवल उजागर कर रहें हैं अपितु ऐसे विषयों पर भारतीय परिप्रेक्ष्य में नया विमर्श खड़ा करने का भी सतत प्रयास कर रहे हैं

यह भी कि भारत ऐतिहासिक दृष्टि से भी विश्व की प्राचीनतम सभ्यता है, हालांकि बावजूद इसके कुछ वामपंथी इतिहासकारों के सुनियोजित षड्यंत्र स्वरूप भारत के इतिहास को केवल मुग़ल काल से लेकर स्वतंत्रता के पश्चात की घटनाओं तक सीमित कर भारत को उसकी सांस्कृतिक जड़ो से विमुक्त करने का कुत्सित प्रयास किया गया है, हम द नैरेटिव के माध्यम से प्राचीन भारत के वास्तविक इतिहास, संस्कृति, सभ्यता, परंपरा, काल को लेकर समाज में जन–जागरण का कार्य भी कर रहे हैं।

द नैरेटिव की अब तक कि यात्रा में आप सभी के अपार समर्थन के लिए सभी सुधी पाठकों, दर्शकों, सहयोगियों एवं समर्थकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए आगे भी हम वृहद स्तर पर सत्य सामने लाने की इस पत्रकारिता में आपसे यथासंभव सहयोग एवं समर्थन की अपेक्षा रखते हैं।

द नैरेटिव से व्हाट्सएप के माध्यम से जुड़ने के लिए आप 9713734000 पर अपना नाम व स्थान भेजकर जुड़ सकते हैं।

/tnworldofficial /+91 7587396911 /tnworldofficial

THE NARRATIVE
+91 7587396911
www.thenarrativeworld.com
/tnworldofficial /tnworldofficial